सम्पन्नता की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन

सम्पन्नता की प्रेरणा का तात्पर्य है सम्पन्नता की खोज करना ।

सम्पन्नता पाने के लिये ईश्वर ने इस संसार को बनाया है, जो बहुत रचनात्मक है।

प्रकृति ने जो भी कुछ बनाया है उसका ज्ञान प्राप्त करना और उसी प्रकृति के अंदर जो काम किये जाते हैं, करने को सम्पन्नता कहते हैं और वही लोग इस बात का क्लेम कर सकते हैं कि उनके द्वारा किये गये काम सम्पन्नतापूर्वक किये गये हैं। उन्होंने कोई भी ऐसी गलती नहीं की जो ठीक नहीं थी। सम्पन्नता की बात को समझने से पहले यह समझना बहुत जरूरी है कि आप जो भी सम्पन्नता पाना चाहते हैं उसे सत्य तरीके से कहने की आपमें शक्ति होना चाहिये। वह छिपाने की कोई वस्तु नहीं है।

सम्पन्नता में प्रेरणा

सम्पन्नता की प्रेरणा से पूर्व सम्पन्नता पर विचार करना इतना आवश्यक नहीं है, जितना उसकी प्रेरणा को जागृत करना। तीन स्थितियां होती है। करना, नहीं करना और करना ही हैं। इनके तीन प्रकार के बीच में जब आपको निर्णय लेना हो तो बीच का निर्णय लेकर आपको आगे बढ़ने की कोशिश करना चाहिए।

आप क्या कर रहे हैं और क्या पाना चाहते हैं। कई बार आपको ऐसे मित्र भी मिल जाते हैं। जो उस विषय की कमजोरी को भी आपके सामने रख सकते हैं।

जब भी किसी व्यक्ति ने अपने आपको बुद्धिमान मानने की कोशिश की तो उसे प्रकृति ने कभी कुछ नहीं दिया, इसलिये सम्पन्नता का तरीका आपको सीखना बहुत आवश्यक है। वह असम्पन्नता से ज्यादा आसान है, परंतु असम्पन्नता उससे बड़ी कठिन है। आप अगर इस किताब को पढ़ रहे हैं तो आप जरा सा असम्पन्नता के बारे में सोचें। आपका शरीर हिल जायेगा और आपके ब्लड सर्क्युलेशन की स्पीड तेज होगी और आप फ्रीडम से भी दूर होने लगेंगे। इसलिये असम्पन्नता का गुण कष्टदायी है और सम्पन्नता पाने का तरीका बहुत आसान है।

कुछ महत्वपूर्ण बातों पर ध्यान देवें कि सम्पन्नता पाने के लिये विषय की सही जानकारी आपको होना आवश्यक है। उसके बाद आपका मॉरल बहुत मेच्योर होना चाहिये। आपका परसेप्शन भी बहुत हाई होना चाहिये। जीतने की शक्ति को आप इतना स्ट्रॉंग बना लें कि आपको ऐसा महसूस होने लगे कि आप जमीन से थोड़ा ऊपर चल रहे हैं। यह कब होगा, जब आप विषय पर पूर्ण जानकारी रखते होंगे।

साधारण शब्दों में स्वर्ग का मतलब सम्पन्नता से है और नर्क का मतलब असम्पन्नता से है। इसलिये सम्पन्नता के गुण और उसका मार्गदर्शन की आवश्यकता आपको इस कारण है कि आप समय को, अपने शरीर को, अपनी बुद्धि को व मन को नकारात्मक दृष्टि से बचाएं और जो नर्क का द्वार है उस पर सदैव के लिये एक बड़ासा ताला जड़ दें।

सम्पन्नता जब आशा से अधिक होने लगती है तो वह भी आपको डगमगाती है। मेरा डगमगाने का तात्पर्य यह है कि आपका शरीर जब सम्पन्नता के प्रभाव से प्रभावित होता है तो उसे गिरने का बहुत डर रहता है। एक समय बुद्धि भी खड़ी होने लगती है, वह भी सोचकर कार्य करना बंद कर देती है। आप चलते–चलते असहाय महसूस करने लगते हैं। ये नकारात्मक नहीं है ये सकारात्मक है।

ऐसा इसलिये महसूस होता है कि जब भी आप कठोर परिश्रम (हार्ड वर्क) करते हैं तो शरीर की जो कैपेसिटी होती है, वह नकारात्मक में चली जाती है और उसे आराम की आवश्यकता होती है, परंतु परिस्थितियाँ उसे आराम करने से मना करती है और वह हार्ड वर्क के लिए तैयार रहता है। इसलिये मैं कहता हूँ कि सम्पन्नता को भी हजम करने के लिये आपको शक्ति की आवश्यकता होती है।

ऐसे में आपको एक अच्छे मार्गदर्शक की सख्त आवश्यकता होती है अन्यथा आप सम्पन्नता में भी धड़ाम से गिर सकते हैं और इतनी ऊँचाई जब आप गिरते हैं तो आप एक नकारात्मक व्यक्ति हो जाते हैं। आपको हर सिच्युएशन नकारात्मक महसूस होती है, इसलिये मार्गदर्शक की आवश्यकता महसूस होती है।

मार्गदर्शक आपको सही समय पर लगाम लगाता है और उस सिच्युएशन से बाहर निकालता है, जिससे आप कोई आपराधिक काम नहीं करने लगें और सम्पन्नता के असली गुण छोड़कर, जिसके कारण आप इस सीमा पर पहुँचे हैं, उसे और अत्याधिक बढ़ने के लिये कोई शार्टकट न अपनाने लगें।

सम्पन्नता का सदगुण है कि वह कभी भी रातों रात प्राप्त नहीं होती है, परंतु असम्पन्नता का गुण है कि वह किसी भी समय प्राप्त हो जाती है। उसे धीरे चलने की आदत नहीं होती है।

आपका एक अप्राकृतिक कार्य आपको चकनाचूर कर सकता है, इसलिये मार्गदर्शक आपको यह कृत्य करने से भी रोकता है। आप कभी यह नहीं समझें कि कोई भी मार्गदर्शक जो पात्र है, आपकी सम्पन्नता से वह नाखुश होगा, परंतु

आपका संशय खुद–ब–खुद उससे आपको दूर करता है, इसलिये तुरंत संशय को एक कागज पर लिखकर उसी विषय पर गंभीरता से विचार करें।

अगर मार्गदर्शक आपके साथ नहीं होगा तो यह जो संशय आपमें बना है, उससे आपकी हानि हो सकती है? तब आपको लगेगा कि संशय ही मूल कारण है जिससे आप अपने मार्ग से भटक गये, तो फिर आप देखेंगे कि इस कदर असम्पन्नता आप पर हावी होती है और आपको तहस–नहस कर देती है।

आप सदैव यह सोचें कि आपके नजदीक जितने भी लोग हैं, वे आपके मार्गदर्शक नहीं है वह तो आपके दुर्गुणों के मित्र है।

इसलिये प्रेरणास्वरूप यह मान लें कि सरलता से सोचा गया कोई भी कठिन कार्य आसानी से आप प्राप्त कर सकते हैं, परंतु ठीक इसके विपरीत कोई भी कार्य कठिनता से सोचा हुआ कभी पूरा नहीं होता है।

अक्सर लेखक, कवि, फिल्म निर्माता व निर्देशक जब किसी विषय में एक मत नहीं होते हैं तो उनकी बनाई हुई फिल्म जनता की नजरों में गिर जाती है। परंतु जब वही चीज सभी के विचार से मंथन होकर बनती है तो उसमें चार चांद लग जाते हैं।

बड़े–बड़े ब्राण्ड तभी बनते हैं, जिनके पास सीक्रेट नाम की कोई चीज नहीं होती है, परंतु उनके पास कोई चीज होती है तो वह टेलेंट, क्योंकि टेलेन्ट एक व्यक्तिगत है और उसी टेलेन्ट के कारण आदमी लेखक, नेता, अभिनेता, मुख्यमंत्री से प्रधानमंत्री और प्रधानमंत्री से राष्ट्रपति के पद तक पहुँच जाता है। टेलेंट किसी पर निर्भर नहीं होता है,

वह साथियों के साथ प्लान करके कुशलता से आगे बढ़ता है और उसी का नाम टेलेंट है, जो उस समूह का लीडर बनकर उस कार्य को आगे बढ़ाता है। वह समाज में ऐसा निर्माण कर देता है कि रातोरात ब्राण्ड बन जाता है। इसलिये मार्गदर्शक भी आपका एक साथी है उसे कभी भी बोझ समझकर डील नहीं करें और न ही उसे किसी स्कूल का ग्रुप समझकर डील करें।

यह प्रेरणा जब आपमें पैदा होगी तो आपके समक्ष बहुत सारे ऐसे उदाहरण आ जायेंगे कि छोटी उम्र का खिलाड़ी किसी बड़ी उम्र की टीम में शामिल होकर उस टीम के उच्च स्थान पर पहुँच गया। चूंकि वह खिलाड़ी है। परंतु जब उस खिलाड़ी को कप्तान बनाया जाता है। सम्पन्नता की कोई गारंटी नहीं होती है।

वह एज ए केप्टन सफल हो जायेगा जरूरी नहीं है। बस यह प्रेरणा होती है कि आप एक अच्छे खिलाड़ी बनें। कप्तान

बनने की कोशिश न करें, क्योंकि जब भी आप कप्तान बनने की कोशिश करेंगे तो अन्य का भार भी आपके ऊपर आ जाता है।

प्रेरणा को प्राप्त करने का तरीका क्या है? ये आपको अपने परिवार से भी कभी कभी प्राप्त हो जाता है, वस्तुतः यह आपके अंदर ही होता है। ये आवश्यक नहीं है कि आपको सीखने के लिये कहीं भी आर्थिक खर्च करना होता है। प्रेरणा ईश्वर की प्रार्थना से कभी कभी प्राप्त हो जाती है और एक राजा सारे राज्य को त्यागकर किसी गुरू के चरणों में चला जाता है।

भारत में इस तरह के कई उदाहरण है, जिसमें बौद्ध, महावीर तथा अन्य उदाहरण है। इससे अधिक प्रेरणा किसी में भी नहीं हो सकती, जो त्यागकर प्रकृति की खोज में आदमी लग जाता है। परंतु इस बात का ध्यान रखना बहुत जरूरी है कि बिना साम्राज्य का निर्माण किये हुए आपमें त्याग की भावना आ गई तो आपकी प्रेरणा गलत है। क्योंकि बनाना बहुत कठिन होता है और छोड़ना बहुत आसान होता है।

सबसे पहले आप व्यक्ति बनें उसके बाद अपने आप में व्यवस्थित निर्माण करें इसके बाद अपने आपको त्याग दें तो

सब कुछ ठीक बैठता है। पाठकों को चाहिये कि वे इसे बहुत गंभीरता से पढ़ें, क्योंकि त्याग का सिर्फ यही एक बड़ा कारण होता है।

जब आपने बहुत कुछ प्राप्त कर लिया है, तब पूरी ताकत सम्पन्नता की ओर लगायें। इसके बड़ा व्यक्तित्व और साम्राज्य देकर, जब उचित समय आये तो उसका त्याग करके प्रकृति का सही आनन्द उठायें। तब आपको ऐसा लगेगा कि मैं स्वर्ग में हूँ, सफल हूँ और अब मुझे ईश्वर को खोजना है। जब आप धीरे–धीरे सम्पन्नता की श्रेणी में बढ़ते चले जाते हैं तो यह भी ध्यान रखें कि आपकी उम्र भी सम्पन्नता के साथ चढ़ती जा रही है। ऐसे समय सेहत के हिसाब से काम करना और गंभीर विषयों से सदैव अपने आपको दूर रखना, क्योंकि किसी भी चीज को जानना मुश्किल नहीं होता। सम्पन्नता के साथ उम्र का कोई वास्ता नहीं है और आपकी उम्र अगर ज्यादा भी होती है तो कोई बात नहीं, परंतु उम्र के अनुसार आपका उद्देश्य बने रहना आवश्यक है। ऊपर मैंने आपको बताया है कि जब उम्र बढ़ती है तो भी सम्पन्नता की शोभा उस तरह नहीं खिलती, जिस प्रकार युवावस्था में उसे प्राप्त करने से खिलती है।

ध्यान रखें कि आप सम्पन्नता के पीछे इतना भी नहीं लगें कि वह आपकी पकड़ में ही नहीं आये, इसलिये आपको

चाहिये कि मस्ती से गाते व गुनगुनाते सम्पन्नता के नजदीक जाने का प्रयास करें। जिस प्रकार प्रसन्नता से आप सम्पन्नता की ओर जा सकते हैं, वह भी प्रसन्नता से आपके नजदीक आती है। हमें चाहिये कि अपने मार्गदर्शक को इस बात की जानकारी जरूर देवें कि आपने उससे कुछ भी छिपाया नहीं है।

आप उसे अपनी समस्या को बताकर उससे हल करने का तरीका जान सकें। अन्यथा उम्र भी एक ऐसी चीज है, जिस प्रकार सूर्य सुबह निकलता है, दोपहर तक पूरी ताकत लगाकर अपनी गर्मी छोड़ता है और शाम को शांत हो जाता है।

इस बात से कतई यह नहीं समझें कि सूर्य डूबता नहीं है। जिस देश में सूर्य दर्शन देता है उसमें से कई देश ऐसे है जहाँ उसकी गर्मी का प्रकोप नहीं है। वहां पर शांति से डूब जाता है, तब जाकर दूसरे देश को अपनी गर्मी का एहसास कराता है, इसलिये मैं कहता हूँ कि अंधेरे की तरफ अपने आपको कभी नहीं बढ़ाओ।

उजाला ही एकमात्र ऐसी चीज है, जो आपके दिमाग और शरीर को प्रकाशमय करती है। अगर इसके अंदर किसी मार्गदर्शन का आपको अनुभव हो तो वह आपके पास बहुत समय तक रह सकता हैं। आपने देखा होगा कि जो भी सफल व्यक्ति हैं, उनके समीप कोई न कोई ब्राम्हण या

उसका गुरू रहता है और वही उसके जीवन को हाईएस्ट एण्ड बेस्ट बनाता है। संसार में वही व्यक्ति नाम कमा सकता है। इसलिये आप सदैव नैतिकता के साथ सम्पन्नता प्राप्त करने की कोशिश करें।

मारधाड़, धूमधड़ाका एवं गुण्डागर्दी आपके चरित्र को छूना भी नहीं चाहिये, इससे आप कोई भी एक्शन लेने में चूक नहीं करें।

आपने देखा होगा कि किसी भी बुराई का अंत क्या होता है ? इसको लिखने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि ये स्वयं कहीं न कहीं दिख जाता है। आप उस विधा के कारण न तो सही खा सकते हैं और न ही सही श्वास ले सकते हैं और उसका परिणाम उसी में बसा है, जिसे आपकी सम्पन्नता का आभास तक नहीं होता है, चूंकि असम्पन्नता के सारे गुण आपमें समा जाते हैं। आपकी रात की नींद हराम हो जाती है और जीवन सोचते सोचते ही निकलने लगता है।

जो व्यक्ति सफल होता है उसे चाहिये कि वह संसार के उन व्यक्तियों को अपने साथ नियुक्त करे अच्छे केरेक्टर के लोग हों तथा आपके अधीन काम करने में उन्हें गर्व महसूस हो। आपकी समस्या आपसे ओवरटेक करें और आपकी सम्पन्नता के लिये सेक्रीफाईज करें।.....